गुरु तेग बहादुर का 350वाँ बलिदान दिवस

चर्चा में क्यों?

हरियाणा विधानसभा ने सर्वसम्मति से गुरु तेग बहादुर के 350वें **बलिदान दिवस** पर उन्हें सम्मानित करने के लिये एक प्रस्ताव पारित किया और 25 नवंबर को कुरुक्षेत्र में एक बड़े कार्यक्रम की योजना की घोषणा की।

- उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार की रक्षा करते हुए नवंबर 1675 में चाँदनी चौक, दिल्ली में सर्वोच्च बलिदान दिया।

मुख्य बिंदु

- **गुरु तेग बहादुर को श्रद्धांजलि:**
  - मुख्यमंत्री **नायब सिंह सैनी** ने एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें कहा गया कि गुरु तेग बहादुर की आपसी सहयोग और भाईचारे की शिक्षाओं का प्रसार करना उनके बलिदान के प्रति सर्वोत्तम श्रद्धांजलि है।
  - प्रस्ताव में गुरु तेग बहादुर के अनुयायी **भाई मति दास, भाई सती दास** और **भाई दयाला** के बलिदान को भी याद किया गया, जिन्होंने अटूट विश्वास के साथ अपने प्राण त्याग दिये।
- **हरियाणा से संबंध:**
  - गुरु तेग बहादुर ने अपनी यात्रा के दौरान हरियाणा के कई स्थानों का दौरा किया, जिनमें **कुरुक्षेत्र, पेहोवा, कैथल, जींद, अंबाला, चीका** और **रोहतक** शामिल हैं। इन स्थलों पर महत्त्वपूर्ण गुरुद्वारे स्थित हैं, जैसे कि **जींद में गुरुद्वारा श्री धमतान साहिब** तथा **अंबाला में गुरुद्वारा श्री शीशगंज साहिब**, जो उनके आशीर्वाद एवं शिक्षाओं के स्थायी प्रतीक हैं।
- **गुरु तेग बहादुर**
  - वे 9वें सिख गुरु थे, जो अपनी शिक्षाओं, बहादुरी और बलिदान के लिये पूजनीय माने जाते हैं।
  - 21 अप्रैल, 1621 को अमृतसर में गुरु हरगोबिंद (छठे सिख गुरु) तथा **माता नानकी** के घर जन्मे गुरु तेग बहादुर का मूल नाम उनके तपस्वी स्वभाव के कारण **त्याग मल** रखा गया था।
  - भाई **गुरदास** से शास्त्रों में तथा बाबा **बुड्ढा** से युद्ध कला में प्रशिक्षण प्राप्त करके उन्होंने 13 वर्ष की आयु में ही युद्ध में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली थी।
  - उन्होंने **गुरु ग्रंथ साहिब** में 116 भजनों का योगदान दिया, सिख शिक्षाओं का प्रसार करने के लिये व्यापक रूप से यात्रा की और **चक-नानकी** (अब आनंदपुर साहिब का हिस्सा) की स्थापना की।
  - वर्ष 1675 में, जबरन धर्मांतरण के खिलाफ धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए मुगल सम्राट औरंगज़ेब के आदेश पर उन्हें दिल्ली में फाँसी दी गई, जिससे उन्हें **"हिंद की चादर"** (हिंद का रक्षक) की उपाधि मिली।

सिख धर्म के दस गुरु:

गुरु नानक देव (1469-1539)	▪ ये सिखों के पहले गुरु और सिख धर्म के संस्थापक थे। ▪ इन्होंने 'गुरु का लंगर' की शुरुआत की। ▪ वह बाबर के समकालीन थे। ▪ गुरु नानक देव की 550वीं जयंती पर करतारपुर कॉरिडोर को शुरू किया गया था।
गुरु अंगद (1504-1552)	▪ इन्होंने गुरुमुखी नामक नई लिपि का आविष्कार किया और 'गुरु का लंगर' प्रथा को लोकप्रिय बनाया।
गुरु अमर दास (1479-1574)	▪ इन्होंने आनंद कारज विवाह (Anand Karaj Marriage) समारोह की शुरुआत की। ▪ इन्होंने सिखों के बीच सती और परदा प्रथा जैसी कुरीतियों को

	समाप्त किया| ▪ ये अकबर के समकालीन थे।
गुरु राम दास (1534-1581)	▪ इन्होंने वर्ष 1577 में अकबर द्वारा दी गई ज़मीन पर अमृतसर की स्थापना की। ▪ इन्होंने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर (Golden Temple) का निर्माण शुरू किया।
गुरु अर्जुन देव (1563-1606)	▪ इन्होंने वर्ष 1604 में **आदि ग्रंथ** की रचना की। ▪ इन्होंने स्वर्ण मंदिर का निर्माण कार्य पूरा किया। ▪ वे **शाहदीन-दे-सरताज (Shaheeden-de-Sartaj)** के रूप में प्रचलित थे। ▪ इन्हें जहाँगीर ने राजकुमार खुसरो की मदद करने के आरोप में मार दिया।
गुरु हरगोबिंद (1594-1644)	▪ इन्होंने सिख समुदाय को एक सैन्य समुदाय में बदल दिया। इन्हें **"सैनिक संत" (Soldier Saint)** के रूप में जाना जाता है। ▪ इन्होंने अकाल तख्त की स्थापना की और अमृतसर शहर को मज़बूत किया। ▪ इन्होंने जहाँगीर और शाहजहाँ के खिलाफ युद्ध छेड़ा।
गुरु हर राय (1630-1661)	▪ ये शांतिप्रिय व्यक्ति थे और इन्होंने अपना अधिकांश जीवन औरंगज़ेब के साथ शांति बनाए रखने तथा मिशनरी काम करने में समर्पित कर दिया।
गुरु हरकिशन (1656-1664)	▪ ये अन्य सभी गुरुओं में सबसे कम आयु के गुरु थे और इन्हें 5 वर्ष की आयु में गुरु की उपाधि दी गई थी। ▪ इनके खिलाफ औरंगज़ेब द्वारा इस्लाम विरोधी कार्य के लिये सम्मन जारी किया गया था।
गुरु तेग बहादुर (1621-1675)	▪ इन्होंने आनंदपुर साहिब की स्थापना की।
गुरु गोबिंद सिंह (1666-1708)	▪ इन्होंने वर्ष 1699 में 'खालसा' नामक योद्धा समुदाय की स्थापना की। ▪ इन्होंने एक नया संस्कार "पाहुल" (Pahul) शुरू किया। ▪ ये मानव रूप में अंतिम सिख गुरु थे और इन्होंने 'गुरु ग्रंथ साहिब' को सिखों के गुरु के रूप में नामित किया।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/350th-martyrdom-anniversary-of-guru-tegh-bahadur